चौरासी लाख जीव योनियां

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,
पूर्व कुलपति, सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

सब प्राणी, सब भूत, सब जीव और सब सत्त्व नाना प्रकार की योनियों में उत्पन्न होते हैं। ये प्राणी वहीं स्थिति और वृद्ध को प्राप्त करते हैं। वे शरीर से उत्पन्न होते हैं, शरीर में रहते हैं और शरीर में वृद्ध को प्राप्त करते हैं और शरीर का आहार ग्रहण करते हैं। वे कर्म के अनुगामी हैं। कर्म ही उनकी उत्पत्ति, स्थिति और गति आदि का कारण है। वे कर्म के प्रभाव से ही विभिन्न अवस्थाओं को प्राप्त करते हैं। प्राणियों की उत्पत्ति स्थान चौरासी लाख है। उनकी एक करोड़ सतानवें लाख पचास हजार जातियां हैं। एक योनि में अनेक जातियां होती है। जैसे गोबर एक योनि है, उसमें कृमिकुल, कीटकुल, वृश्चिककुल आदि अनेक जातियां है। सम्पूर्ण जीव योनि षटकायिक जीवों में विभक्त है। इनमें पृथ्वीकायिक जीवों का उत्पत्ति स्थान सात लाख, अप्कायिक जीवों का उत्पत्ति स्थान सात लाख, तेजसकायिक जीवें का उत्पत्ति स्थान सात लाख, वनस्पतिकायिक जीवों का उत्पत्ति स्थान चौवीस लाख, द्वीन्द्रिय जीवों का उत्पत्ति स्थान दो लाख, त्रीन्द्रिय जीवों का उत्पत्ति स्थान दो लाख, चतुरिन्द्रिय जीवों का उत्पत्ति स्थान दो लाख, तिर्यंच पंचेन्द्रिय जीवों का उत्पत्ति स्थान चार लाख, मनुष्य योनि चौदह लाख, नारक जीव चार लाख, देव योनि चार लाख। इस प्रकार पृथ्वीकायिक से लेकर देव योनि तक सम्पूर्ण जीवों का उत्पत्ति स्थान चौरासी लाख है।

जीवन क्या है? सचेतन और अचेतन में क्या अंतर है? जैन दर्शन के अनुसार चेतना और भौतिक शरीर की संयुक्त अवस्था को जीवन कहते हैं। जीवित दशा में स्थूल भौतिक शरीर के साथ एक सूक्ष्म चेतन जुड़ा रहता है। भौतिक शरीर से इसका पार्थक्य ही मृत्यु है। जब तक बंधन से मुक्ति नहीं मिलती तब तक आत्मा कर्म से बंधा रहता है। मृत्यु होने पर आत्मा से कार्मण शरीर ही पृथक् होता है। इसलिए यह कर्म ही भौतिक शरीर संरचना के प्रति उतरदायी है। अभौतिक आत्म तत्व का कार्य एक उत्प्रेरक के समान है। जीवित प्राणी का जीवन काल

आयुष्य कर्म के द्वारा निर्धारित किया जाता है। जीवित प्राणी में श्वासोच्छवास, संज्ञा, भाषा, कषाय, इन्द्रिय, लेष्या और वेदना विद्वान रहते हैं। इन सभी का संचालन प्राणशक्ति के द्वारा होता है। जीवन भर ये संज्ञाएं इच्छाएं, भूख और प्यास, लालसा और संतोष प्रेम और घृणा भाव परिवर्तन और भय उत्पन्न करते हैं।

जिस प्रकार मानव में जीवन है उसी प्रकार पौधों और पशुओं में जीवन स्वीकार किया गया है। सभी प्रकार के जीवों में पृथ्वी के कीटाणुओं में उसी प्रकार जीवन है। लेकिन लकड़ी, पत्थर आदि पौद्‌गलिक वस्तुओं में जीवन नहीं है। ये जड़ पदार्थ हैं। इन्हें अचेतन कहा जाता है। चेतना भौतिक तत्वों का गुण नहीं है। भौतिक तत्वों में चेतना के संयोग से चेतना उत्पन्न होती हैं। वनस्पतियों और पशुओं में वातावरण के अनुकूल अपने को बनाने की एक प्रमुख विशेषता पाई जाती हैं। जिसके कारण बदलते हुए वैश्विक परिदृश्य में उनका अस्तित्व सुरक्षित रहता है। कुछ विशिष्ट प्रजातियां वातावरण के अनुकूल अपनी संरचना विशिष्ट प्रकार से करती हैं।

लैंगिक उत्पाद स्त्री और पुरुष के संसर्ग से होता है। पर्यावरण से जीवन प्रदान करने वाले पुद्‌गलों को एकत्रित कर जब आत्मा स्वतः जन्म धारण कर लेती है तो उसे सम्मूर्छन जन्म कहा जाता है। एकेन्द्रिय से लेकर असंज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंचों तथा असंज्ञी पंचेन्द्रिय मनुष्य सम्मूर्छन जन्म लेते हैं। कुछ संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंच भी सम्मूर्छन विधि से जन्म लेते हैं। सम्मूर्छन जन्म नर मादा के बिना संयोग से धारण हो जाता है। उपपाद जन्म केवल दैवी और नारकीय जीवों का होता है। अनुकूल परिस्थितियों के अभाव में सम्मूर्छन प्रक्रिया के माध्यम से जीवन सम्भव नहीं हो सकता। प्रत्येक वस्तु की उत्पत्ति हो सकती हैं किन्तु आत्मा की उत्पत्ति नहीं होती। आत्मा अजर–अमर, अविनाशी और स्थायी तत्व है। जीवों का आवागमन बना रहता है।

शरीर का अस्तित्व और विकास आंशिक रूप से डीएनए पर निर्भर करता है। अंगों का निर्माण, जोड़ों का निर्माण, ढ़ांचे का निर्माण और ऐसे ही दूसरे जीवित रहने के कार्य और शरीर वृद्धि डीएनए और नामकर्म के परिणाम है। वैदिक धर्म के अनुसार स्त्री के गर्भाशय में वीर्याधान की प्रक्रिया को गर्भाधान कहा जाता है। स्त्री का मासिक स्राव जब समाप्त होता है और जब उसके गर्भाशय में मनुष्य का शुक्राणु प्रवेश करता हैं तो ये भी गर्भाधान कहलाता है। आत्मा जब गर्भ में प्रवेश करता हैं तो उस समय आत्मा इन्द्रियों से युक्त भी होता है तथा उनसे शून्य

भी होता है। गर्भाधान के समय आत्मा भौतिक इन्द्रियों से तो शून्य होता है परन्तु सूक्ष्म इन्द्रियों सहित होता है। शरीर केवल औदारिक, वैक्रिय और आहारक ही नहीं होता, बल्कि तैजस और कार्मण भी होता है।

पर्याप्ति और प्राण जीव जन्तुओं और पशुओं के वास्तविक जीवित तत्व हैं। पर्याप्ति और प्राण दो ऐसी शक्तियां हैं, जो जीवन के नियामक हैं। प्राणी का जीवन प्राणशक्ति पर आधारित है। प्राणशक्तियां दस हैं– स्पर्शन इन्द्रिय प्राण, रसन इन्द्रिय प्राण, घ्राण इन्द्रिय प्राण, चक्षु इन्द्रिय प्राण, श्रोत्र इन्द्रिय प्राण, मन बल, वचन बल, काय बल, श्वासोच्छ्वास प्राण, आयुष्य प्राण। ये दसों प्राण छः पर्याप्तियों में समाहित हैं– इन्द्रिय पर्याप्ति, श्वासोच्छ्वास प्रर्याप्ति, शरीर पर्याप्ति, भाषा पर्याप्ति, मनः पर्याप्ति, आहार पर्याप्ति।